

पद ८०

(रागः पिलु - तालः धुमाळी)

मीपण गेल्या हा देह जावो वा चिर राहो । विकल्प गेल्या मग द्वैत
पाहो अद्वैत होवो ॥१॥ देहाभिमान गेल्या शैव नाहीं वैष्णव नाहीं ।
निःसंग ब्रह्मासी नाम नाहीं वा रूप नाहीं ॥२॥ फलचि नाहीं तेथे
कर्म नाहीं मूलधर्म नाहीं । झालाचि नाहीं त्यां जन्म नाहीं वा मृत्यु
नाहीं ॥३॥ द्रष्टाचि नाहीं तेथे दृश्य नाहीं वा ज्ञान नाहीं । भ्रांतिही
गेल्या कोणि बद्ध नाहीं वा मुक्त नाहीं ॥४॥ अनुभवी या संन्यास
नाहीं वा भोग नाहीं । लटक्या व्यवहारीं निषेध नाही वा विधि
नाहीं ॥५॥ स्फूर्तिच नाहीं तेथे वेद नाहीं वा शास्त्र नाहीं । दुर्वाद
घेतां अनुभव नाहीं वा सौख्य नाहीं ॥६॥ मुळींच नाहीं त्या नाम
नाहीं वा रूप नाहीं । ज्ञानमार्ताण्डा उदय नाहीं वा अस्त नाहीं ॥७॥